

# SANT BALBIR SINGH SEECHEWAL

Sant Balbir Singh Seechewal is a well – known environmentalist who set a unique example in the country by leading volunteer effort to rejuvenate the 160 km long historic rivulet Kali Bein – where according to the legend, founder of Sikhism Guru Nanak Dev Ji got enlightenment. What was unique to this project was collective participation of thousands of people who worked day and night to bring the sewer–choked, dead river back to life. Upholding Sikh Gurus' teaching to respect purity of water, air and earth through his practice and preaching, he has set an example of construing dedication to nature and environment as a religious faith.

2. Born on February 2, 1962 at village Seechewal in district Jalandhar, Sant Seechewal came in contact with his spiritual teacher Sant Avtar Singh. Though Sant Seechewal took up the path of spiritualism, yet, in place of staying away from worldly affairs, he practically worked among people, motivating them to work for their mental, spiritual and material advancement.

3. Responding to the clarion call of Sant Seechewal, people started to pool in - physically as well as with their resources – to work for public good. He first started preparing roads in the rural areas of districts Jalandhar and Kapurthala. In the 'Nineties he came to be known as Sadkan Wala Baba (the Baba who built roads) and it was in 2000 that he started the Kar Sewa of Kali Bein and was the first one to start cleaning the rivers with his own hands.

4. Former President of India, Dr. A.P.J. Abdul Kalam came to visit the Kar sewa site at Sultanpur Lodhi in Punjab on August 17, 2006. Later, after his retirement, he once again visited the place to attend the 8th anniversary celebrations of Kar Sewa of the Holy Bein on July 27, 2008. At several international and national forums, Dr. Kalam praised the Sant Seechewal's environmental endeavours and emphasized that the model be replicated elsewhere also to ensure cleanliness of water resources.

5. After revival of the kali bein rivulet, he started focusing on other polluted water channels and rivers. Pollution in Budha Nullah, Chitti Bein and Kala Sanghia drain which are among the most polluted drains, have been continuously on his agenda even if that meant pulling up official machinery. Apart from numerous public interactions on issue of pollution, he took out a Chetna March (Awareness procession) in April 2009 along the banks of river Satluj in Punjab and the canals flowing to Rajasthan. It was after his continuous raising of the issue that all political parties in Punjab now have environmental causes in their election manifestos.

6. Apart from cleaning of water resources, Sant Seechewal has also demonstrated model of waste water management in a way that nothing actually goes waste. His water management solutions, widely known as 'Seechewal Model', which include treating waste water in villages with minimum running expenses and then using treated water for agriculture, are now being replicated in 1657 villages along the river Ganga by the Government of India. The model has been replicated in 125 villages of Punjab where people including NRIs have pooled in resources for these solutions. Chief Ministers of Bihar, Haryana, Madhya Pradesh, and Delhi have said to replicate 'Seechewal Model'. Sant Seechewal has established two big nurseries of plants from where one lakh saplings of traditional, fruit and medicinal plants are distributed free every year.

7. Sant Seechewal attended International Conference of World Religious Leaders on Climate Change held at Windsor in September 2009 by ECO Sikh organization with the collaboration of UNESCO, International Conference of Religious Saints on Climate Change at Copenhagen (Denmark) in December 2009 organized by UNO apart from several other national and international events to discuss environmental issues. He was acclaimed by international Time magazine as 'The Hero of Environment' while several newspapers and magazines reported extensively on his work.



# संत बलबीर सिंह सीचेवाल

संत बलबीर सिंह सीचेवाल एक जाने-माने पर्यावरणविद हैं जिन्होंने 160 किलोमीटर लंबी ऐतिहासिक नदिका 'कालीबेन' का कायाकल्प करने हेतु स्वंयसेवी प्रयास की अगुआई करके देश में एक अप्रतिम उदाहरण स्थापित किया – यहां एक किंवदन्ती के अनुसार, सिख धर्म के संस्थापक गुरूनानक देव जी को ज्ञानबोध हुआ था। इस परियोजना की अनोखी बात यह थी कि इसमें हजारों लोगों ने सामूहिक भागीदारी की, जिन्होंने बंद पड़े सीवरों से युक्त एक मृत नदी को पुन: जीवन प्रदान करने के लिए दिन-रात परिश्रम किया। जल, वायु और पृथ्वी की शुद्धता का सम्मान करने वाले सिख गुरूओं के उपदेशों को परिपुष्ट करते हुए और उनका अनुसरण करते हुए तथा इसका उपदेश देते हुए आपने प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति अपने समर्पण को एक धार्मिक आस्था के रूप में समाकर्षित करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

2. आपका जन्म 02 फरवरी, 1962 में जालंधर जिले के सीचेवाल गांव में हुआ था। आप अपने आध्यात्मिक गुरू संत अवतार सिंह के संपर्क में आए। यद्यपि आपने आध्यात्म का मार्ग अपनाया, फिर भी, सांसारिक कार्यों से दूर रहने के बजाए आपने लोगों को उनकी मानसिक, आध्यात्मिक और सांसारिक उन्नति के लिए कार्य करने के प्रति प्रेरित करने के लिए उन लोगों के बीच वास्तविक रूप से कार्य किया।

3. आपके आह्वान का सम्मान करते हुए लोग समूह में एकत्रित होना आरंभ हो गए और जनकल्याण के कार्य के लिए शरीरिक श्रम करने के साथ-साथ उन्होंने अपने संसाधनों को भी इस कार्य में लगा दिया। सर्वप्रथम आपने जिला जालंधर एवं कपूरथला के ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कें बनाने का कार्य शुरू किया। नब्बे के दशक में आपको सड़क वाले बाबा के नाम से जाना जाने लगा और यह वर्ष 2000 का समय था जब आपने काली बेन की कार-सेवा आरंभ की और आप पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने हाथों से नदियों की सफाई का कार्य आरंभ किया।

4. भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम 17 अगस्त, 2006 को पंजाब सुल्तानपुर लोधी में कार-सेवा स्थल का दौरा करने आए थे। बाद में, अपनी सेवानिवृत्ति के बाद भी डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने एक बार पुन: 27 जुलाई, 2008 को पवित्र बेन की कार-सेवा के 8वें वार्षिक समारोहों में शिरकत करने हेतु उक्त स्थल का दौरा किया था। डॉ. कलाम ने अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय मंचों से आपके पर्यावरणीय प्रयासों की प्रशंसा की और इस बात पर जोर दिया कि जल संसाधनों की सफाई सुनिश्चित करने के लिए इस मॉडल को अन्य जगहों पर भी दोहराया जाना चाहिए।

5. 'कालीबेन' नदिका के पुनर्जीवन के बाद आपने अन्य प्रदूषित जल कुल्याओं और नदियों पर अपना ध्यान केंद्रित किया। बूढ़ा नाला, चिटी बेन तथा काला संघिया नाला, जोकि, सर्वाधिक प्रदूषित नालों में से हैं, का प्रदूषण निरंतर उनकी कार्य सूची में शामिल रहा, चाहे यह आधिकारिक मशीनरी को रोकने के आशय से रहा हो। प्रदूषण के मुद्दे पर अनेक सार्वजनिक सभाओं के अलावा आपने अप्रैल 2009 में पंजाब में सतलुज नदी और राजस्थान की बहती नहरों के किनारों पर चेतना मार्च (जागरूकता अभियान) निकाला। यह आपके द्वारा लगातार इस मुद्दे को उठाए जाने का ही परिणाम है कि सभी राजनीतिक पार्टियां अपने-अपने घोषणा-पत्रों में पर्यावरण के कार्यों को शामिल करती हैं।

6. जल स्रोतों की सफाई करने के अलावा आपने अपशिष्ट जल प्रबंधन के मॉडल को इस प्रकार प्रदर्शित किया कि वास्तव में कुछ भी व्यर्थ नहीं होता है। आपके जल प्रबंधन समाधानों को व्यापक रूप से 'सीचेवाल मॉडल' के रूप में जाना जाता है, जिसमें न्यूनतम औसत खर्चों से गांवों में अपशिष्ट जल को उपचारित करना तथा इसके बाद न्यूनतम औसत खर्चों से गांवों में उपचारित जल का उपयोग करना और इसके उपरांत उपचारित जल को कृषि कार्यों के लिए प्रयोग करना शामिल है, जिन्हें अब भारत सरकार द्वारा गंगा नदी के किनारे बसे 1657 गांवों में दोहराया जा रहा है। इस मॉडल को पंजाब के 125 गांवों में दोहराया गया जहां अनिवासी भारतीयों सहित, लोगों ने इन समाधानों के लिए संसाधनों को एकत्रित किया है। बिहार, हरियाणा, मध्य प्रदेश तथा दिल्ली ने 'सीचेवाल मॉडल' को प्रबलित करने का संकल्प लिया है। आपने पौधों की दो बड़ी नर्सरियां स्थापित की हैं, जहां प्रत्येक वर्ष पारंपरिक, फलदार और चिकित्सकीय पौधों के एक लाख बालवृक्षों का नि:शुल्क वितरण किया जाता है।

7. कई एक राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं के अलावा पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के लिए आपने यूनेस्कों के सहयोग से ईको सिख संगठन द्वारा सितंबर, 2009 में विंडसर में आयोजित वर्ल्ड रिलीजियस लीडर्स ऑन क्लाइमेट चेंज के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन तथा दिसम्बर, 2009 में यू एन ओ द्वारा आयोजित कोपेनहेगेन (डेनमार्क) में जलवायु परिवर्तन पर इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑफ रिलीजियस सेंट्स में हिस्सा लिया। अंतरराष्ट्रीय टाइम पत्रिका द्वारा "द हीरो ऑफ एनवायरमेंट" के रूप में आपका अभिनंदन किया गया, जबकि कई समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने आपके कार्य पर व्यापक रूप से रिपोर्टिंग की है।